UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 26 बाबा गंभीरनाथ (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

बाबा गंभीरनाथ का जन्म जम्मू एवं कश्मीर राज्य के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। ये बहुत ही सरल स्वभाव के थे। युवावस्था में ही इन्हें सांसारिक जीवन से वैराग्य उत्पन्न हो गया। नाथ संप्रदाय के एक संन्यासी ने इन्हें उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर में स्थित गोरखनाथ मंदिर के महंत से दीक्षा लेने की सलाह दी। गंभीरनाथ उस नाथ संन्यासी की सलाह को मानकर गोरखपुर के गोरक्षपीठ के महंत बाबा गोपाल नाथ जी से मिले और उनसे दीक्षा प्राप्त की। इन्होंने गोरक्षपीठ में रहकर अनेक हिंदू धर्मग्रंथों का गहनता से अध्ययन किया। इन्होंने अनेक तीर्थ स्थलों की यात्रा की। इन्होंने अपने सिधियों का उपयोग केवल मानव कल्याण के लिए किया। बाबा गंभीरनाथ बहुत अच्छा सितार बजाते थे तथा सितार की धुन पर भजनों का सुंदर गायन करते थे। उनका मानना था कि सदा सत्य बोलना चाहिए। छल-प्रपंच से दूर रहना चाहिए। समस्त धर्मों और संतों का आदर करना चाहिए। मानवता का कल्याण करते हुए अंत में बाबा गंभीरनाथ ने 21 मार्च, 1917 को अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के गोरक्षनाथ मंदिर के दिव्य, शांतिमय और पवित्र प्रांजण में ही उनकी समाधि स्थापित है, जो शाश्वत, सत्य और शांति का प्रतीक है।

https://www.evidyarthi.in/